INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

# समाज के सतत् विकास में शिक्षक की भूमिका

# (Role of Teacher in Sustainable Development of Society)

**विनोद कुमार**

शोध छात्र
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

**DOI No.** 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/02.2023-67299147/IRJHIS2302012

**सारांश :**

*शिक्षक समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है। किसी भी देश या समाज के निर्माण में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है। कहा जाए तो शिक्षक ही समाज का आईना होता है। हिन्दू धर्म में शिक्षक के लिए कहा गया है कि 'आचार्य देवो भवः' यानी कि शिक्षक या आचार्य ईश्वर के समान होता है। यह दर्जा एक शिक्षक को उसके द्वारा समाज में दिए गए योगदानों के बदले स्वरूप दिया जाता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है, जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है, जहां पर कि शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ–साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते हैं, जो कि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। शिक्षक ज्ञान का महासागर है। बच्चो के भविष्य को सवारने में शिक्षक का योगदान अतुलनीय है। शिक्षक नहीं तो देश की प्रगति भी नहीं। शिक्षक अपना सारा जीवन में बच्चो के विकास में समर्पित कर देते है। उनका सम्मान विद्यार्थी तह उम्र करेंगे। शिक्षक वह ज्ञान का प्रकाश है जो अन्धकार की राह को चीरकर ज्ञान की रोशनी भर देती है।*

***महत्वपूर्ण शब्द*** *: समाज, शिक्षक की भूमिका*

**प्रस्तावना :**

एक राष्ट्र को बनाने में एक शिक्षक का जितना सहयोग है, योगदान है, उतना शायद किसी और का हो ही नहीं सकता। क्योंकि एक राष्ट्र को उन्नति के चरम शिखर पर ले जाते हैं उसके राजनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति, लेखक, अभिनेता, खिलाड़ी आदि और परोक्ष रूप से इन सबको बनाने वाला कौन है ? एक शिक्षक। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के संदर्भ में एक शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। उसके अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे आज–कल विद्यार्थी बहुत ही सजग, कुशल, अद्यतन (Updated) होने के साथ–साथ बहुत अस्थिर और अविश्वासी भी होते जा रहे हैं। इसके कारण चाहे जो कुछ भी हो परंतु एक शिक्षक को आज के ऐसे ही विद्यार्थियों को उचित प्रशिक्षण, सदुपयोगी शिक्षण और सटीक कल्याणकारी, दूरगामी मार्गदर्शन प्रदान करते हुए उन्हें भावी देश के कर्णधार, जिम्मेदार देशभक्त नागरिकों में परिणित करना है। एक शिक्षक की जिम्मेदारी बहुत अधिक होती है। क्योंकि उसे ना केवल बच्चों का बौद्धिक,

नैतिक, मनोवैज्ञानिक ,शारीरिक विकास करना है अपितु सामाजिक, चारित्रिक, एवं सांवेगिक विकास करना भी आज शिक्षक का ही कर्तव्य है।

शिक्षक को अधिक से अधिक बच्चों के साथ इंटरेक्शन (Interaction) यानि वार्तालाप करना चाहिए ताकि उनके व्यक्तित्व पर यथासंभव अपना प्रभाव डाल सके। अपने अनुभव, अपनी शिक्षा, अपने प्रेम, समर्पण अपनी सृजन शक्ति, अपने त्याग, अपने धैर्य आदि का पूर्ण प्रदर्शन करते हुए बच्चों के भी अनुभव, उनके मूल विचार, उनकी भावनाओं आदि को जानने का प्रयास करें और यथासंभव उन्हें अभिप्रेरित करने का प्रयास करें। क्योंकि इन्ही सब विद्यार्थियों में से ही भविष्य में हमारे देश का नाम रोशन करने वाले कई नागरिक पैदा होंगे। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक सजग, उदात्त चरित्र, धार्मिक नैतिकता परिपूर्ण शिक्षक की आवश्यकता है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को हम ऐसे भारतीय नागरिक बनाने में सफल हो सकें जो विश्व में भारत का नाम रोशन कर सकें और पुनः भारत को 'जगतगुरु' की उपाधि प्राप्त करवा सके। हम सब की भी यही अभिलाषा है।

हमारा साहित्य समाज को न केवल ज्ञान, बोध और मूल्य प्रदान करता है अपितु एक चिंतन की दिशा भी प्रदान करता है ताकि हम सभी यथासंभव प्रयास कर सके जिससे कि भारतीय मूल्य, भारतीय सभ्यता एवम संस्कृति, भारतीय साहित्य का विश्व में सदैव उच्चस्थ स्थान बना रहे तथा भारत पुनः "जगदगुरु" (विश्वगुरु) की उपाधि ग्रहण करे वो भी अपने अक्षय साहित्य, विशुद्ध सभ्यता एवं अलौकिक संस्कृति के बल पर। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूज्यनीय रहा है। कोई उसे 'गुरु' कहता है, कोई 'शिक्षक' कहता है, कोई 'आचार्य' कहता है, तो कोई 'अध्यापक' या 'टीचर' कहता है। ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनों में कहा जाए तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है और शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता रहता है, तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है। माता–पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते, लेकिन एक शिक्षक ही है जिसे हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है, क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है इसलिए ही शिक्षक को 'समाज का शिल्पकार' कहा जाता है।

एक शिक्षक या गुरु द्वारा अपने विद्यार्थियों को स्कूल में जो सिखाया जाता है या जैसा वे सीखते हैं, वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है, जैसा कि वे अपने आसपास होता देखते हैं इसलिए एक शिक्षक या गुरु ही अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। गुरु या शिक्षक का संबंध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर राह दिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता है और विद्यार्थी को सही सुझाव देता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता है।

आजकल के शिक्षण प्रणाली में काफी बदलाव आया है। पहले के समय में अध्यापक श्यामपट का उपयोग करते थे। तब बच्चे शिक्षक से सवाल करने में हिचकिचाते थे लेकिन आज के दौर में परिवर्तन आया है। आज बच्चे जिज्ञासु और उत्सुक है। वह शिक्षकों से सवाल पूछते है जो की एक सकारात्मक बदलाव है। आज

अध्यापक पढ़ाने के लिए स्मार्ट बोर्ड का उपयोग करते है। स्मार्ट बोर्ड से पढ़ाई आसान हो गयी है। शिक्षक पढ़ाई संबंधित विषयों को पढ़ाने और समझाने के लिए उन्हें वास्तविक जीवन के उदाहरण के साथ जोड़कर समझाते है ताकि बच्चों को सारे तथ्य अच्छे से समझ आ जाये।

जब अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश का राष्ट्रपति आता है तो वो भारत की गुणवत्तायुक्त शिक्षा की तारीफ करता है। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहां की प्रतिभा दबकर रह जाएगी। बेशक, किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्व को अधोरेखांकित करते हैं। वास्तविक रूप में ज्ञान ही शिक्षा का आशय है, ज्ञान का आकांक्षी है—विद्यार्थी और इसे उपलब्ध कराता है शिक्षक।

एक शिक्षक द्वारा दी गई शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। प्राचीनकाल से आजपर्यंत शिक्षा की प्रासंगिकता एवं महत्ता का मानव जीवन में विशेष महत्व है। शिक्षकों द्वारा प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वरतुल्य माना जाता है। आज भी बहुत से शिक्षक, शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ—साथ ऐसे भी शिक्षक हैं, जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे हैं और ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है और धन के अभाव से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है।

आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ—प्रदर्शक होता है, जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती हैं। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी। इससे वर्तमान छात्रों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षक ही भारत देश को शिक्षा के व्यवसायीकरण और बाजारीकरण से स्वतंत्र कर सकते हैं। देश के शिक्षक ही पथ—प्रदर्शक बनकर भारत में शिक्षा जगत को नई बुलंदियों पर ले जा सकते हैं। गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं, जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु के प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :**

किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वे न सिर्फ हमको सही आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है। किसी भी देश या राष्ट्र के विकास में एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षार्थी को दी गई शिक्षा और शैक्षिक विकास की भूमिका का अत्यंत महत्व है। शिक्षक विद्यार्थिओं को आने वाले बेहतर भविष्य के लिए तैयार करते है। विद्यार्थी के मन में विषय संबंधित और जीवन संबंधित कोई भी दुविधा आये तो शिक्षक उस दुविधा को हल करने में हर मुमकिन कोशिश करता है। शिक्षक की मेहनत की वजह से कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, कोई

वकील, पायलट, सैनिक इत्यादि बन जाते है। अगर शिक्षक नहीं होंगे तो यह पद पर कोई व्यक्ति कार्यरत नहीं हो पाएंगे । शिक्षक इंसान को अच्छे और बुरे के बीच फर्क करना सिखाते है। वह अधर्म, घृणा, ईर्ष्या, हिंसा इन बुरी आदतों से विद्यार्थिओं को दूर रहना सिखाते है। शिक्षक शिष्टता, सहनशीलता, धैर्य से जीवन के संघर्षो से पार करना सिखाते है।

**साहित्यावलोकन :**

रांची विश्वविद्यालय के यूजीसी मानव संसाधन विकास केंद्र में आयोजित संकाय प्रेरण कार्यक्रम में सोमवार को शिक्षण अधिगम और सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण जैसे विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ विनय भरत (2020) ने भारत में उच्च शिक्षा में शैक्षिक नेतृत्व विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि शैक्षिक नेतृत्व, सामान्य शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों की प्रतिभाओं और ऊर्जा को सूचीबद्ध करने और मार्गदर्शन करने की प्रक्रिया है। कहा कि शिक्षक क्या बताते हैं से ज्यादा जरूरी है, शिक्षक क्या हैं। क्योंकि समाज कल, आज और कल भी शिक्षकों के ही कंधे पर सवार होकर आगे बढ़ेगा। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन होने के कारण शिक्षकों से इतनी आकांक्षाएं बढ़ गई हैं कि उनकी भूमिका वक्त के साथ और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है।

रांची वीमेंस कॉलेज के अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ ममता केरकेट्टा (2021) ने पाठ्यक्रम में सॉफ्ट स्किल्स प्रशिक्षण के महत्व विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि सॉफ्ट स्किल्स, कौशल का एक समूह है जो हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व को बेहतर बनाता है और विकसित करता है। अधिकांश कॉरपोरेट घरानों और शैक्षणिक संस्थानों ने एक व्यक्ति के जीवन और समाज में इन कौशल के योगदान को समझा।

डॉ किरण तिवारी (2022) ने पर्यावरण चेतना और सतत विकास लक्ष्य विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि सतत विकास का मुख्य लक्ष्य भविष्य की पीढ़ी के लिए पर्यावरण और संसाधनों का संरक्षण और इसका इस तरह से उपयोग करना कि हमारे उपयोग के बाद भी यह भविष्य की पीढ़ी के बचा रह सके। सतत विकास के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह काफी आवश्यक है कि हम पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयास करें।

भारत ने अपने सर्व शिक्षा अभियान (सभी के लिए शिक्षा) कार्यक्रम और बच्चों के मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार (आरटीई) (RTE) अधिनियम के ऐतिहासिक कार्यान्वयन के माध्यम से सभी की शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। प्राथमिक शिक्षा में लगभग सार्वभौमिक नामांकन है और ग्रामीण क्षेत्रों के लगभग सभी बच्चों के लिए एक किलोमीटर के दायरे में प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध हैं। स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या जो 2009 में लगभग आठ मिलियन थी,2014 में घटकर छह मिलियन तक हो गई है। इन उपलब्धियों के बावजूद, अधिगम और समानता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करने हेतु आगे कई चुनौतियां बनी हुई हैं। एक तिहाई से अधिक बच्चे प्रारंभिक शिक्षा का चक्र पूरा करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं। अधिकांश बच्चे जो स्कूल नहीं जाते हैं वे कमजोर और निबल वर्ग से होते हैं, जिनमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समूह, धार्मिक अल्पसंख्यक समूह और दिव्यांग बच्चे शामिल हैं।

आरटीई अधिनियम (RTE Act) और सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) (SDGs) को साकार करने के लिए, यह आवश्यक है कि बच्चों को आजीवन अधिगम की नींव रखने हेतु गुणवत्तापूर्ण, प्रारंभिक बचपन की शिक्षा प्राप्त हो। आंकड़े इंगित करते हैं कि 3 से 6 वर्ष की आयु के 70: से थोड़ा अधिक बच्चे पूर्व–प्राथमिक शिक्षा में भाग ले रहे हैं।

जब बच्चे गुणवत्तापूर्ण पूर्वस्कूली शिक्षा के बिना और इस प्रकार, स्कूल की तैयारी के बिना सीधे प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करते हैं, तो उनके छोड़ने और अपनी पूरी क्षमता से नहीं सीखने की संभावना अधिक होती है। इस प्रकार बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपनी शिक्षा कितनी अच्छी तरह से शुरू करते हैं और वे स्कूल के लिए कितने तैयार हैं।इसके अलावा, भारत के उल्लेखनीय जनसांख्यिकीय लाभांश को भुनाने के लिए, देश को न केवल अपनी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना होगा, बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा करने होंगे, इसके साथ ही कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि सुनिश्चित करनी होगी। युवाओं को प्रेरित किया जाना चाहिए और निर्णय लेने में भाग लेने की अनुमति दी जानी चाहिए, खासकर उन क्षेत्रों में जिनका उनके भविष्य पर सीधा प्रभाव पड़ने वाला है। आज की स्थिति में, युवा लोग भारत की सकल राष्ट्रीय आय में लगभग 34 प्रतिशत का योगदान करते हैं।

**निष्कर्ष :**

शिक्षक का स्वरूप शैक्षिक व्यवस्था और कार्यप्रणाली को जीवन्त बनाये रखने के लिए आवश्यक है। शिक्षक के अभाव में शैक्षिक लक्ष्यों और प्रक्रिया में व्यापक अंतर हो सकता है। इनका प्रयोग वर्तमान के साथ ही भविष्य की अपेक्षाओं की भी पूर्ति करने में सहायक है। शिक्षक शिक्षा में छात्राध्यापक सामुदायिक सहभागिता, अभिनव शिक्षण, तकनीकी, खेल–खेल में शिक्षा, सरल अंग्रेजी अधिगम, बाल संसद, कला शिल्प से सर्वांगीण विकास, कॉन्सेप्ट मैपिंग, चित्रकथा के माध्यम से शिक्षा आदि का प्रयोग अपने भावी जीवन में कर पायेंगे। शिक्षण में गुणात्मक उन्नयन होता है, शिक्षा को दिशाबोध प्राप्त होता है जिससे व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षक–शिक्षा में नवाचार की महत्ता स्वीकार की जाती है।

**सन्दर्भ :**


1) मशेल, जे.एम. (2003). इमर्जिंग फ्यूचर्स : इनोवेशन इन टीचिंग एण्ड लर्निंग वी.ई.टी.ए.एन.टी.ए. मेलबार्न.
2) कुमार, डॉ. अमित (2015). भारतीय शिक्षक शिक्षा में अभिनव दृष्टिकोण : Vol. (5) ISSN-2277-1255
3) https://www.hindikunj.com/2016/05/role-of-teachers-in-students-life.html.
4) Dovelop in Teacher Education: Dr. Saroj Agarwal, Research Poedia, Vol. (3) No. 1 ISSN 2347-9000.
5) https://www.msn.com/enin/entertainment/story हिन्दुस्तान टीम• 16 Jan
6) https://bit.ly/3jd8hRe
7) https://bit.ly/3DeoHkc
8) https://bit.ly/3sKP4tg